Topic-28 हल सन्धि अनुनासिक 2,

मो राजि समः क्वौ ।

क्विबन्ते राजतौ परे समो मस्य म एव स्यात् ।

सम्राट् ।

अव्यय होने के कारण 'सम्' पदसंज्ञक है। अतः 'मोऽनुस्वारः' से उसके मकार के स्थान पर अनुस्वार प्राप्त होता है। प्रकृत सूत्र से उसका बाध कर इस मकार के स्थान पर मकार का ही विधान किया गया है। अभिप्राय यह कि क्विप्-प्रत्ययान्त 'राज' धातु परे होने पर 'सम्' के स्थान पर मकार ही रहता है, अनुस्वार नहीं होता।

हे मपरे वा ।

मपरे हकारे परे मस्य मो वा । किम्ह्मलयति, किं ह्मलयति ।

यह सूत्र भी 'मोऽनुस्वारः' का अपवाद है। किन्तु यह अपवाद वैकल्पिक है। अतः मकारपरक हकार परे होने पर एक पक्ष में मकार के स्थान पर मकार ही रहता है, और दूसरे पक्ष में 'मोऽनुस्वारः' से मकार को अनुस्वार हो जाता है।

वा० – यवलपरे यवला वा । किय्ँ ह्यः, किं ह्यः । किवँ ह्वलयति, किं ह्वलयति । किलँ ह्लादयति, किं ह्लादयति ।

P.T.O

'किम् + ह्यः' में मकार के पश्चात् ह-कार आया है और उस हकार के पश्चात् यकार भी है। अतः प्रकृत सूत्र से इस मकार के स्थान पर अनुनासिक 'यँ' हो 'कियँ ह्यः' रूप सिद्ध होता है। किन्तु यह कार्य विकल्प से ही होता है, अतः उसके अभाव में 'मोऽनुस्वारः' से मकार को अनुस्वार हो 'किं ह्यः' रूप बनता है। अन्य उदाहरण इस प्रकार हैं:-

किम् + ह्वलयति = किवँ ह्वलयति, किं ह्वलयति (वकारपरक हकार परे होने पर)।

किम् + ह्लादयति = किलँ ह्लादयति, किं ह्लादयति (लकारपरक हकार परे होने पर)।

नपरे नः।

नपरे हकारे मस्य नो वा। किन्ह्नुते। किं ह्नुते।

'मोऽनुस्वारः' का अपवाद है, किन्तु यह अपवाद वैकल्पिक है। अतः नकारपरक हकार परे होने पर मकार के स्थान पर एक पक्ष में उक्त सूत्र नकार होता है और दूसरे पक्ष में 'मोऽनुस्वारः' से अनुस्वार।